

साहित्य

कहानी

रूपा

■ सुभद्रा कुमारी चौहान

अ समय की घंटी ने सभी को बेचैन-सा कर दिया। अभी आधा घंटा भी नहीं हुआ, मैटून जेल बंद करके गई है। फिर तुरंत ही वह घंटी कैसे? जेल-जीवन से घबराई हुई बहनों ने सोचा, शायद उनकी ही रिहाई का फरमान आया हो, जिनके मूलाकाती बहुत दिनों से न आए थे, उन्होंने अंदाज लगाया शायद उनसे कोई मिलने आया है। जिन्हें किसी तरह के सामान की प्रतीक्षा थी उन्होंने समझा, उनका सामान ही आया होगा।

मेरी तीन साल की बेटी ममता दोड़ी हुई आई, और मेरे गले में लिपटकर बोली, अम्मा उठो चलो! घंटी बजी है। फाटक खुलेगा। आज तो हम लोग भी छूटने वाले हैं।

मैं अच्छी तरह जानती थी कि उसकी आशा कितनी निराधार है, फिर भी उसका मन रखने के लिए उसके साथ फाटक की ओर चल पड़ी।

जमादारिन जल्दी-जल्दी अपना पल्ला संभलती हुई आई, और गले में लिपटकर बोली, अम्मा उठो चलो! घंटी बजी है। फाटक खुलेगा।

मैं अच्छी तरह जानती थी कि उसकी आशा कितनी निराधार है, फिर भी उसका मन रखने के लिए उसके साथ फाटक की ओर चल पड़ी।

जमादारिन जल्दी-जल्दी अपना पल्ला संभलती हुई आई, और गले में लिपटकर बोली, अम्मा उठो चलो! घंटी बजी है। फाटक खुलेगा।

असिस्टेंट जेलर के साथ एक चौबीस-पच्चीस साल की स्त्री अंदर आई और एक तरफ चुप्पी खड़ी हो गई।

उसके साथ कपड़े और गंभीर मुद्रा संभलती हुई आई, और उसे घंटी बहनों ने अंदाज लगाया कि यह भी शायद राजबद्दलनी है।

जेलर ने जमादारिन को बुलाया और उसे धीरे-धीरे समझाकर चला गया।

जमादारिन ताला बन्द करके अंदर आई। अपनी हाथ की छड़ी से उस नई आई हुई

अपनी हाथ की छड़ी से उस नई आई हुई छड़ी को मारती हुई बोली, घल हरामजादी ! बच्चे को मारते हुए और अंतील गालियाँ देते हुए कहा, आँख दिखाती है दंडी ! देख तो नम्बरारिन, उधेड़ ले चमड़ी, रीढ़ की और गुनहगाने में बन्द कर दे।

जिन । जाने क्यों हाथ उठाती है।

जमादारिन का स्वर उत्तरी समय बदल गया। उसने मुझे देखा ही न था; नहीं तो शायद इस डर से कि कहाँ दूसरा प्रहार भी न हो जाये। परंतु जमादारिन को इतने ही से संतोष कैसे हो जाता? उसने और भी भी जार से मारते हुए और अंतील गालियाँ किया था।

मार से वह स्त्री तिलगिला-सी उठी, फिर भी जमादारिन के आगे-आगे, जल्दी-जल्दी चल पड़ी। शायद इस डर से कि कहाँ दूसरा प्रहार भी न हो जाये। परंतु जमादारिन को इतने ही से संतोष कैसे हो जाता? उसने और अपने बच्चे को मार डाला है इसने।

मैंने कहा, उसके अपराध को सजा तो कानून से छोटी सजा से लेकर फांसी तक की हो रखा है और कैसे बताता है। तुम्हारा काम तो उसे अपने देख रेख में बन्द रखना भर है। एकाएक फाटक की घंटी बजी, और फाटक खुला। मैंने देखा कि दो स्त्रियाँ रुपा को कहाँ लिए जा रही हैं। पास ही खड़ी हुई

जमादारिन का स्वर उत्तरी समय बदल गया। उसने मुझे देखा ही न था; नहीं तो शायद इस बेहमो से न मारती। बोली, आप नहीं जानतीं बहन जी, यह खुरी औरत है, अपने बच्चे को मार डाला है इसने।

मैंने कहा, उसके अपराध को सजा तो कानून से छोटी सजा से लेकर फांसी तक की हो रखा है और कैसे बताता है। तुम्हारा काम तो उसे अपने देख रेख में बन्द रखना भर है। एकाएक फाटक की घंटी बजी, और फाटक खुला। मैंने देखा कि दो स्त्रियाँ रुपा को कहाँ लिए जा रही हैं। पास ही खड़ी हुई

वह गुनहगाने में बन्द कर दी गई। सब



जमादारिन

ताला बन्द करके अंदर आई।

अपनी हाथ की छड़ी से उस नई आई हुई

छड़ी को मारती हुई बोली, घल हरामजादी !

बच्चे को मारता ही था तो उसे पैदा कर्यों किया था।

मार से वह दृष्टि तिलगिला-सी उठी, फिर नीं जमादारिन

के आगे-आगे, जल्दी-जल्दी घल पड़ी। शायद इस डर से

कि कहाँ दूसरा प्रहार भी न हो जाये। परंतु जमादारिन

को इतने ही से संतोष कैसे हो जाता? उसने और भी

जोर से मारते हुए और अंदरील गालियाँ देते हुए।

कहा, आँख दिखाती है दंडी ! देख तो

नम्बरारिन, उधेड़ ले चमड़ी, रीढ़ की और

गुनहगाने में बन्द कर दे।

लोग अपने-अपने काम में लग गए, मगर मुझे उस औरत की याद न भूली। मैं उस गुनहगाने की तरफ गई। लकड़ी का दरवाजा खुला था। वह छड़ के दरवाजे में बढ़ थी। मैं अंदर आँगन में गई तो देखा, वह औरत अभी उसी प्रकार बैठी थी, रोटी और दाल उसने छुई थी न थी। मैंने उससे पूछा, तुमने खाया क्यों नहीं? ५ खाना खा लो।

उसने मेरी अंदर कर देखा। फिर उसके आँखों में आँसू भर आया। मेरा भी जी भर आया। मैंने कहा, तुम रोये मत, वर्ना मैं भी तुम्हारे साथ रो रोये। खाना खा लो, फिर मुझसे बतलायो कि तुम क्यों पकड़कर लाई गई हो। सचमुच तुमने...पर विश्वास नहीं होता कि कोई माँ अपने बच्चे को मार सकती है।

-कैसे? मैंने अंशर्चय से पूछा।

-कैसे मारा, क्या बताऊँ...और वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसने न तो खाया और न यही बतलाया कि उसने अपने बच्चे को क्यों और कैसे मारा। मैं अपने आँखों में रो रोये रेख में बन्द रखना भर है। आपका लेट गई है, और वहाँ कुछ ढेर तक पड़ी।

एकाएक फाटक की घंटी बजी, और फाटक खुला। मैंने देखा कि दो स्त्रियाँ रुपा को कहाँ लिए जा रही हैं। पास ही खड़ी हुई

कैदिन ने पूछा, रुपा को कहाँ लिए जा रहे हैं ये लोग?

वह धीरे-धीरे बोली, खुली औरत है न इसलिए फांसी वार्ड में ले जा रहे हैं।

रुपा चली गई। पर मुझे उसका रोना, उसकी विषादभरी आँखें, उसका चेहरा भूलता न था। मन कहता था कि वह हत्यारिन नहीं है, पर मेरी आँखों के सामने वह फांसी वार्ड में गई, हत्या के जुर्म में पकड़कर आई, फिर अविश्वास के लिए कहा गया थी?

धीरे-धीरे मैं रुपा को भूल चली थी। एक दिन अखबार के एक समाचार ने उस याद को ताजा कर दिया। समाचार था, ...गांव में रुपा नाम की स्त्री अपनी छह साल की बच्ची को लेकर कुएँ में कूद पड़ी...खबर होते ही गाँव वाले आ गए और माँ-बच्ची को कैसे निकाला। बच्ची तो मर चुकी थी लेकिन रुपा को कौहनी हानि न पहुंची थी और वह बच्ची की हत्या करने के अपराध में पकड़कर जबलपुर सेंट्रल जेल में लाई गई। बच्ची को लेकर वह कुएँ में क्यों कूदी इसका कारण अज्ञात है।

मैं अखबार पढ़ा और जान गई कि हत्यारिन रुपा है। मेरे रहते ही वो महाने बाद एक रोज आजन्म कारावास का दंड लेकर रुपा फिर जेल में आ गई। दयालु मृत्युरिट्रैन ने उसे फांसी न देकर आजन्म कारावास की सजा दी थी।

मैं अखबार पढ़ा और जान गई कि हत्यारिन रुपा है। मेरे रहते ही वो महाने बाद एक रोज आजन्म कारावास का दंड लेकर रुपा फिर जेल में आ गई। दयालु मृत्युरिट्रैन ने उसे फांसी न देकर आजन्म कारावास की सजा दी थी।

रुपा सब स्त्रियों के साथ जेल में काम

करती, मगर चेहरे पर विषाद की छाया बनी ही रहती। एक दिन मैं बीमार पड़ी और वह मेरे पास सेवा-सुश्रूषा के लिए भेजी गई। अस्पताल में मैं अकेली अपनी बच्ची के साथ रहती थी। रुपा दिन-रात मेरे पास रहती थी। बच्ची भी उसे बड़ी भर न छोड़ती थी। अब भी उसे बड़ी भर न छोड़ती थी। और वहाँ जीने पर गोपा एक लड़की लिए बैठती थी। नीचे मूँहले भर के दस-बारह लड़के-लड़कियाँ... उसे चिढ़ा रहे थे। वह बहुत ज्यादा चिढ़ा रहता था और क्यारा उसके दाढ़ी और जानी वाले दौड़ते थे। उसे बड़ी भर न छोड़ती थी। और वहाँ जीने पर गोपा एक लड़की लिए बैठती थी। नीचे मूँहले भर के दस-बारह लड़के-लड़कियाँ... उसे चिढ़ा रहे थे। वह बहुत ज्यादा चिढ़ा रहता था और क्यारा उसके दाढ़ी और जानी वाले दौड़ते थे। उसे बड़ी भर न छोड़ती थी। और वहाँ जीने पर गोपा एक लड़की लिए बैठती थी। नीचे मूँहले भर के दस-बारह लड़के-लड़कियाँ... उसे चिढ़ा रहे थे। वह बहुत ज्यादा चिढ़ा रहता था और क्यारा उसके दाढ़ी और जानी वाले दौड़ते थे। उसे बड़ी भर न छोड़ती थी। और वहाँ जीने पर गोपा एक लड़की लिए बैठती थी। नीचे मूँहले भर के दस-बारह लड़के-लड़कियाँ... उसे चिढ़ा रहे थे। वह बहुत ज्यादा चिढ़ा रहता था और क्यारा उसके दाढ़

